वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 245

श्री षट्खण्डागम विधान

–मंत्र रचना–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–विधान रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से मनाए जा रहे "शांति वर्ष-2009" के अन्तर्गत प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के 52वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 292943

Website : www.jambudweep.org

E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

प्रथम संस्करण	ज्येष्ठ कृ. अमावस्या	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वीर नि. सं. 2535	16/-रु.
	24 मई 2009	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

आचार्यों ने ठीक ही कहा है–

ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारण।

वास्तव में ग्रन्थ-पुराणों के रहस्य को, कोई स्तुति आदि को पढ़कर जब उसका अर्थ भलीभांति समझ में आ जाता है तो हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और वही प्रसन्नता भव्य जीवों के लिए सुख का कारण बन जाती है।

वर्तमान युग में किसी के पास बड़े-बड़े पुराण-ग्रंथों को पढ़ने का समय नहीं है, इस बात को जानकर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ग्रंथों का आद्योपान्त आलोढन करके उनमें से सार निकालकर छोटी-छोटी पुस्तकों की रचना करके बहुत बड़ा उपकार किया है, इन पुस्तकों को पढ़कर पूरे कथानक का परिज्ञान थोड़े समय में ही हो जाता है। कथा साहित्य के साथ ही पूज्य माताजी ने अनेक विधानों की भी रचना की है। आज कोई भी दिन ऐसा नहीं रहता है जब देश के किसी न किसी स्थान पर पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान न हो रहा हो।

विविध विधानों की शृँखला में ही यह ''षट्खण्डागम विधान'' आपके समक्ष प्रस्तुत है इस विधान में मंत्रों की रचना पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने की है तथा पूजन, जयमाला आदि विधान रचना पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने की है।

प्रसन्नता की बात है कि पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के 52वें जन्मदिवस-ज्येष्ठ कृ. अमावस्या–24 मई 2009 के पावन अवसर पर इस षट्खण्डागम विधान का प्रकाशन हो रहा है। इस विधान को करके आप सभी अपने ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि करें, यही मंगल प्रेरणा है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जैन शासन का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ है-षट्खण्डागम। जैसा कि नाम से ही प्रतिभासित होता है कि जिस आगम में छह खण्डों का वर्णन हो, वह है षट्खण्डागम। अर्थात् षट्+खण्ड+आगम=षट्खण्डागम, यह षट्खण्डागम ग्रंथ छह खण्डों में विभक्त है अतः इसका षट्खण्डागम यह नाम सार्थक है। उन छह खण्डों के नाम हैं–जीवस्थान, क्षुद्रकबंध, बंधस्वामित्वविचय, वेदनाखण्ड, वर्गणाखण्ड और महाबंध।

इस षट्खण्डागम ग्रंथराज पर पूर्वाचार्यों ने छह टीकाएँ लिखी हैं, यथा–श्री कुंदकुंददेव ने प्रथम तीन खण्डों पर ''परिकर्म'' नामक टीका लिखी, श्री शामकुंडाचार्य ने पाँच खण्डों पर ''पद्धति'' नाम की टीका लिखी, श्री तुम्बुलूर आचार्य ने 'चूड़ामणि' नाम से टीका लिखी, श्री समन्तभद्रस्वामी ने चतुर्थ टीका रची, श्री वप्पदेवसूरि ने ''व्याख्याप्रज्ञप्ति'' नामक टीका लिखी तथा श्री वीरसेनाचार्य ने ''धवला'' नामक टीका रची।

वर्तमान में उपर्युक्त पाँच टीकाएँ उपलब्ध नहीं हैं, मात्र श्री वीरसेनाचार्यकृत 'धवला' टीका ही उपलब्ध है। 16 पुस्तकों में प्रकाशित इसी धवला टीका पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ''सिद्धान्तचिंतामणि'' नामक संस्कृत टीका लिखकर वर्तमान युग पर महान उपकार किया है। उस संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी कर रही हैं, जिसकी 4 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने छहों खण्डों में से मंत्रों को चुन-चुनकर 78 मंत्रों से समन्वित ''षट्खण्डागम व्रत'' बनाया पुनः उन्हीं मंत्रों को आधार बनाकर पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इस ''षट्खण्डागम विधान'' की सुन्दर रचना की है।

इस विधान में 78 अर्घ्यों को सात वलयों में विभाजित किया गया है जिसमें से प्रथम वलय में 9 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य, द्वितीय वलय में 13 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य, तृतीय वलय में 15 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य, चतुर्थ वलय में 17 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य, पंचम वलय में 22 अर्घ्य-1 पूर्णार्घ्य, छठे वलय में 1 अर्घ्य-2 पूर्णार्घ्य तथा कषाय प्राभृत ग्रंथ का 1 अर्घ्य-2 पूर्णार्घ्य, इस प्रकार इस विधान में कुल

78 अर्घ्य, 9 पूर्णार्घ्य एवं एक जयमाला पूर्णार्घ्य है। विधान के अंत में ''षट्खण्डागम व्रत'' भी प्रकाशित है। जो भी श्रावक-श्राविकाएँ षट्खण्डागम व्रत करें, वे व्रत के उद्यापन में इस ''षट्खण्डागम विधान'' को अवश्य करें तथा **एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस षट्खण्डागम विधान को वर्ष में दो बार अवश्य करें, एक तो ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी अर्थात् श्रुतपंचमी को, जिस दिन आचार्य श्री पुष्पदंत एवं भूतबलि ने इस ग्रंथ को पूर्ण किया था और दूसरी बार वैशाख बदी दूज को, जिस दिन ईसवी सन् 2007 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने 52वें आर्यिका दीक्षा दिवस पर सोलहों ग्रंथों की संस्कृत टीका लगभग 3000 पृष्ठों में लिखकर पूर्ण की थी, उस दिन को ''श्रुतज्ञान दिवस'' के रूप में मनाते हुए आप सभी उस दिन षट्खण्डागम ग्रंथ का पूजन-विधान आदि करके अपने ज्ञान की वृद्धि करें।**

जिस प्रकार छह खण्ड को जीतने वाले महापुरुष ''चक्रवर्ती'' कहलाते हैं, उसी प्रकार इस छह खण्डरूप आगम के ज्ञाता आचार्यश्री धरसेनस्वामी ''सिद्धान्तचक्रवर्ती'' की उपाधि से सुशोभित हुए तथा आचार्यश्री पुष्पदंत एवं भूतबलि को भी इस षट्खण्डागम का ज्ञान होने से वे भी ''सिद्धान्तचक्रवर्ती'' के ही समान थे। उस समय तो ग्रंथ रचना पूर्ण होने पर देवों ने आकर आचार्यश्री पुष्पदंत एवं भूतबलि की पूजा की थी। चूँकि वर्तमान में पंचमकाल होने से देवों का आगमन नहीं होता परन्तु पूज्य माताजी द्वारा सोलहों पुस्तकों की टीका पूर्ण करने के उपरांत उन्हें विद्वत्वर्ग एवं समाज ने मिलकर ''सिद्धान्त चक्रेश्वरी'' की उपाधि प्रदान की।

इस प्रकार षट्खण्डागम ग्रंथराज की महिमा को जानकर आप सभी इस विधान को करें तथा सरल संस्कृत एवं हिन्दी टीका से समन्वित षट्खण्डागम ग्रंथ का स्वाध्याय करके अपने ज्ञान की अतिशायि वृद्धि करें, यही इसकी सार्थकता है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ(निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विधान रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा– हाईस्कूल

गुरुसंघ में आगमन – सन् 1969

आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत – सन् 1971, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. ग्यारस को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, कल्याण मंदिर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान आदि लगभग100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित ''षट्खण्डागम की संस्कृत टीका एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, आरती, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

इस प्रकार बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के श्रीचरणों में नमन करते हुए भगवान जिनेन्द्र से यह प्रार्थना है कि पूज्य माताजी दीर्घकाल तक स्वस्थ रहें तथा उनकी रत्नत्रय साधना निराबाध चलती रहे, ताकि भूले-भटके संसरी प्राणियों को सम्यक्बोध की प्राप्ति होती रहे।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान–संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।
12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् 1974 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली

परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।

9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.

संरक्षक

1. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।

16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।

46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गोहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्द (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।

75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिति सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी)राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)

षट्खण्डागम ग्रंथ अभिषेक विधि

षट्खण्डागम ग्रंथ को दर्पण के सामने रखें तथा दर्पण पर पड़ रहे षट्खण्डागम ग्रंथ के प्रतिबिम्ब का अभिषेक करें।

–शार्दूलविक्रीडित छंद –

भाषासर्वमयो ध्वनिर्जिनपतेर्दिव्यध्वनिर्गीयते।
आनन्त्यार्थसुभृत् मनोगततमो हंति क्षणात्प्राणिनः।।
दिव्यस्थानगतामसंख्यजनतामाल्हादयन् निःसृतः।
ते दिव्यध्वनयस्त्रिलोकसुखदाः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।1।

(थाली में पुष्पांजलि करें)

जलाभिषेक –

व्योमापगादितीर्थोद्भवेनातिस्वच्छवारिणा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम् ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पवित्रतरजलेन षट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा।। उदक.....

इक्षुरसाभिषेक –

सद्यः पीलितपुण्ड्रेक्षुरसेन शर्करादिना।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं इक्षुरसेन षट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.....

घृताभिषेक –

कनत्काञ्चनवर्णेन सद्यःसंतप्तसर्पिषा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं घृतेन षट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा।। उदक......

दुग्धाभिषेक –

सद्दोक्षीरप्रवाहेन शुक्लध्यानाकरेण वा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुग्धेन षट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा।

उदक.......

दध्नाभिषेक –

हिमपिण्डसमानेन दध्ना पुण्यफलेन वा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दध्नेतन षट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा।

उदक.......

चतुष्कोण कलश जलाभिषेक –

हेमोत्पन्नचतुः कुम्भैर्नानातीर्थाम्बुवारिभिः।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुष्कोणकलशेनषट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक.....

सुगन्धित जलाभिषेक –

दिव्यद्रव्यौघमिश्रेण सुगन्धेनाच्छवारिणा।
जिनेन्द्रमुखजां वाणीं सिञ्चे विश्वैकमातृकाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः सुगन्धित जलेन षट्खण्डागमग्रंथं अभिषेचयामि स्वाहा। उदक......

–पूर्णार्घ्य –

इतिश्रीभारती जैनीं येऽभिषिच्य यजन्ति ते।
विज्ञाय द्वादशाङ्गानि वै स्युः केवलिनोऽचिरात्।।

उदक.....जिनगृहे जिनवाच महंयजे।

ॐ ह्रीं षट्खण्डागमग्रंथं पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री षट्खण्डागम विधान का मण्डल

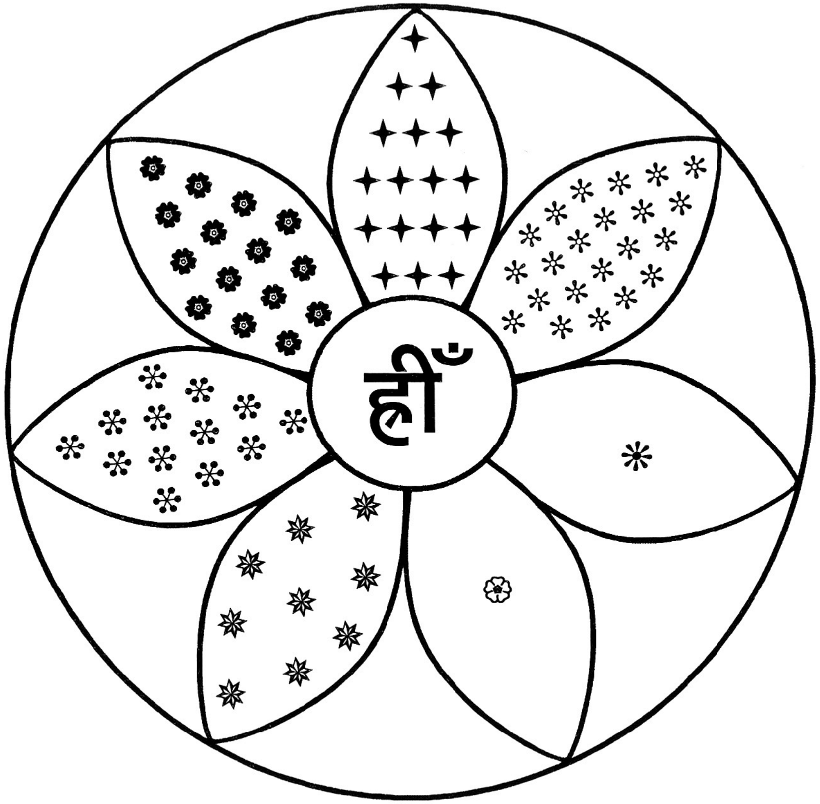

इस मण्डल पर 7 वलय हैं, जिसमें 78 अर्घ्य चढ़ाए जाते हैं। इसमें बीचों बीच बने ह्रीं बीजाक्षर पर चौकी रखकर उस पर षट्खण्डागम ग्रंथ विराजमान करके मण्डल विधान प्रारंभ करें।

श्री षट्खण्डागम विधान

मंगलाचरण

–शेर छंद–

कृतयुग के प्रथम देव, आदिनाथ को नमूँ।
प्रभु वीर तक चौबीस-जिनेश्वर को भी प्रणमूँ।।
माँ भारती को ज्ञानप्राप्ति हेतु मैं नमूँ।
फिर तीन लोक के समस्त सूरिवर नमूँ।।1।।

आचार्य श्री धरसेन जी जग में प्रसिद्ध थे।
श्री पुष्पदन्त-भूतबलि उनके शिष्य थे।।
गुरु की कृपा से जो हुए श्रुतज्ञान के ज्ञाता।
षट्खण्डजिनागम स्वरूप श्रुत के प्रदाता।।2।।

उस ही अती प्राचीन, पूज्य-पवित्र ग्रंथ पे।
टीका रची संस्कृत में, ज्ञानमती मात ने।।
'सिद्धान्तचिंतामणि' नाम, टीका का रखा।
हिन्दी में अनूवादकार्य, मैंने भी किया।।3।।

उनमें से ही अठहत्तर, मंत्रों को चुन लिया।
माँ ज्ञानमती ने हमें, प्रदान कर दिया।।

उन मंत्रों को आधार बना करके बंधुओं!
मैंने रचा विधान यह, तुम सब इसे करो।।4।।

इसके प्रभाव से तुम्हारा, ज्ञान बढ़ेगा।
क्रम-क्रम से वही ज्ञान, केवलज्ञान बनेगा।।
कैवल्यज्ञान तो अमूल्य, सम्पदा मानी।
पुरुषार्थ सारे इसके लिए, करता है प्राणी।।5।।

षट्खण्ड जिनागम का एक, व्रत भी बताया।
आगम के गूढ़ रहस्य से, परिचित है कराया।।
इस व्रत को भक्ति-श्रद्धा से, जो भी करेंगे।
वे शीघ्र ही कैवल्यरमा-पति बनेंगे।।6।।

हमने नहीं देखे थे, वे धरसेनसूरि जी।
नहिं देखे हमने पुष्पदंत-भूतबली भी।।
पर वर्तमान में हमारा, भाग्य खिल गया।
श्री ज्ञानमती माताजी का, दर्श मिल गया।।7।।

जिनकी पवित्र-प्रासुक व शुद्ध लेखनी।
सिद्धान्तचिन्तामणि टीका, जिससे है लिखी।।
अरु ढाई शतक ग्रन्थ भी, लिखे हैं मात ने।
उनके चरण-कमल में नमूँ, भक्ति-भाव से।।8।।

शंभु छंद – ॐकारमयी दिव्यध्वनि से, प्रभु वीर ने जग उपकार किया।
गौतमगणधर ने द्वादशांग में, गूँथ उसे साकार किया।।
फिर परम्पराचार्यों द्वारा, शास्त्रों में लिखकर प्राप्त हुआ।
उस द्वादशांग को नमन करूँ, जिससे ज्ञानामृत प्राप्त हुआ।9।।

अथ षट्खण्डागम पूजा विधान प्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री षट्खण्डागम पूजा

–स्थापना (शंभु छंद) –

जिनशासन का प्राचीन ग्रंथ, षट्खंडागम माना जाता।
प्रभु महावीर की दिव्यध्वनि से, है इसका सीधा नाता।।
जब द्वादशांग का ज्ञान धरा पर, विस्मृत होने वाला था।
तब पुष्पदंत अरु भूतबली ने, आगम यह रच डाला था।।1।।

–दोहा–

षट्खंडागम ग्रंथ की, पूजन करूँ महान।
मन में श्रुत को धार कर, पा जाऊँ श्रुतज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

–अष्टक –

(तर्ज –मैं चंदन बनकर........)

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
ज्ञानामृत पीने से, भव बाधा नशती है।
हम जल की झारी लाए, त्रयधारा करने को।।हम.।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
चन्दन की शीतलता तो, कुछ क्षण ही रहती है।
शाश्वत शीतलता हेतू, श्रुतपूजन कर लूँ मैं।।हम.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।

श्रुतवारिधि में रमने से, अक्षय पद मिलता है।
हम अक्षत लेकर आए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
स्वाध्याय परमतप द्वारा, विषयाशा नशती है।
हम पुष्पों को ले आए, पुष्पांजलि करने को।।हम.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
ज्ञानामृत का आस्वादन, ही सच्चा भोजन है।
नैवेद्य थाल ले आए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
सम्यग्दर्शन का दीपक, मन का मिथ्यात्व भगाता।
इक दीप जलाकर लाए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धांतिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
कर्मों की धूप जलाऊँ, निज ध्यान की अग्नी में।
हम धूप सुगंधित लाए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।

फल के स्वादों में फँसकर, नहिं मुक्ति सुफल को पाया।
अब थाल फलों का लाए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
कोमल मृदु वस्त्रों द्वारा, निज तन को सदा ढका है।
अब वस्त्र बनाकर लाए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
'चन्दनामती' श्रुत अर्चन, से पद अनर्घ्य मिलता है।
हम अर्घ्य थाल ले आए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

षट्खंडागम ग्रंथ के, सम्मुख कर जलधार।
ज्ञान और चारित्र से, करूँ भवाम्बुधि पार।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

विविध पुष्प की वाटिका, से पुष्पों को लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, श्रुत समुद्र के मांहि।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

अथ प्रथमवलये नवकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रथम खण्ड के 9 अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-सप्तसप्त्यधिकशतसूत्र-समन्वित-सत्प्ररूपणानाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विनवत्यधिकशतसूत्र-समन्वित-द्रव्यप्रमाणानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विनवतिसूत्रसमन्वित-क्षेत्रानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-पंचाशीत्यधिकशतसूत्र-समन्वित-स्पर्शनानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशदधिकत्रिशत-सूत्रसमन्वित-कालानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-सप्तनवत्यधिकत्रिशत-सूत्रसमन्वित-अन्तरानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-त्रिनवतिसूत्रसमन्वित-भावानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्व्यशीत्यधिकत्रिशतसूत्र-समन्वित-अल्पबहुत्वानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-पञ्चदशाधिकपञ्चशत-सूत्रसमन्वित-नवचूलिकानाम-जीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

–पूर्णार्घ्य–

पहला है जीवस्थान खण्ड, छह पुस्तक की टीका इसमें।
दो सहस तीन सौ पिचहत्तर, सूत्रों का सार भरा इसमें।।
अनुयोग आठ नव चूलिकाओं, में सत्प्ररूपणा आदि कथन।
यह ज्ञान मुझे भी मिल जावे, इस हेतु करूँ श्रुत का अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टअनुयोगनवचूलिकासमन्वितजीवस्थाननामप्रथमखण्ड-जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीयवलये त्रयोदशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

द्वितीय खण्ड के 13 अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रिचत्वारिंशत्सूत्र-समन्वित-बन्धकसत्त्वप्ररूपणानाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकनवतिसूत्रसमन्वित-स्वामित्वानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षोडशोत्तरद्विशतसूत्र-समन्वित-एकजीवापेक्षाकालानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकपंचाशदधिकशत-सूत्रसमन्वित-एकजीवापेक्षान्तरानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रयोविंशतिसूत्र-समन्वित-नानाजीवापेक्षाभंगविचयानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकसप्तत्यधिकशत-सूत्रसमन्वित-द्रव्यप्रमाणानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-चतुर्विंशत्यधिकशत-सूत्रसमन्वित-क्षेत्रानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीत्यधिकद्वि-शतसूत्रसमन्वित-स्पर्शनानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-पंचपंचाशतसूत्र-समन्वित-नानाजीवापेक्षयाकालानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टषष्टिसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षयान्तरानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टाशीतिसूत्र-समन्वित-भागाभागानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षडुत्तरद्विशतसूत्र-समन्वित-अल्पबहुत्वानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीतिसूत्र-समन्वित-महादण्डकनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

–पूर्णार्घ्य –

षट्खण्डागम का दुतिय खण्ड, है क्षुद्रकबंध कहा जाता।
पन्द्रह सौ चौरानवे सूत्र से, सहित ग्रंथ यह कहलाता।।
सप्तम पुस्तक में है निबद्ध, यह बंध का प्रकरण बतलाता।
इस श्रुत का अर्चन करूँ कर्म, ज्ञानावरणी तब नश जाता।।1।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधप्रकरणसमन्वितक्षुद्रकबंधनामद्वितीयखण्डजिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीयवलये पंचदशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तृतीय खण्ड के 15 अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्र-समन्वित-गुणस्थानसंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनषष्टिसूत्रसमन्वित-गतिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचत्रिंशतसूत्रसमन्वित-इन्द्रियमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-कायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-योगमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्र-समन्वित-वेदमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्र-समन्वित-कषायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टादशसूत्रसमन्वित-ज्ञानमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टाविंशतिसूत्र-समन्वित-संयममार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचसूत्रसमन्वित-दर्शनमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-सप्तदशसूत्रसमन्वित-लेश्यामार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-भव्यत्वमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्र-समन्वित-सम्यक्त्वमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-संज्ञिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विसूत्रसमन्विताहार-मार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

—पूर्णार्घ्य—

है तृतियबंधस्वामित्वविचय, का खण्ड आठवीं पुस्तक में।
त्रय शतक व चौबिस सूत्रों के, द्वारा सिद्धान्त कथन इसमें।।
जो मन वच तन की शुद्धि सहित, इस आगम का अध्ययन करें।
वे कर्मबंध से छुट जाते, हम अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें।।1।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधादिसिद्धान्तकथनसमन्वितबंधस्वामित्व-विचयनामतृतीयखण्ड-जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुर्थवलये सप्तदशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चतुर्थ खण्ड के 17 अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-णमोजिणाणमित्यादि-गणधरमंत्रयुत सप्तभेदसहित षट्सप्ततिसूत्रसमन्वित-कृति-अनुयोगद्वारनाम -वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-वेदना-निक्षेपानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुस्सूत्रसमन्वित-वेदनानयविभाषणतानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुःसूत्रसमन्वित-वेदनानामविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चूलिकासमेतत्रयो-दशोत्तरद्विशतसूत्रसमन्वित-वेदनाद्रव्यविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-नवनवतिसूत्रसमन्वित-वेदनाक्षेत्रविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वयचूलिकासमेत एकोनाशीत्यधिक द्विशतसूत्रसमन्वित-वेदनाकालविधानानुयोगद्वारनाम-वेदना-खण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिचूलिकासमेत-चतुर्दशोत्तर-त्रिशत्सूत्रसमन्वित-वेदनाभावविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-षोडशसूत्रसमन्वित-वेदनाप्रत्ययविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-पंचदशसूत्रसमन्वित-वेदनास्वामित्वविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-अष्टपंचाशत्सूत्र-समन्वित-वेदनावेदनाविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वादशसूत्रसमन्वित-वेदनागतिविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकादशसूत्रसमन्वित-वेदनानन्तरविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-विंशत्युत्तरत्रिशतसूत्र-समन्वित-वेदनासन्निकर्षविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिपंचाशत्सूत्रसमन्वित-वेदनापरिमाणविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकविंशतिसूत्र-समन्वित-वेदनाभागाभागविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-सप्तविंशतिसूत्र-समन्वित-वेदनाल्पबहुत्वानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

–पूर्णार्घ्य –

वेदनाखण्ड नामक चतुर्थ है, खण्ड चार पुस्तक निबद्ध।
नौ से बारह तक चारों में, पन्द्रह सौ चौदह सूत्र बद्ध।।
इन शास्त्रों की पूजन से मन का, कर्म असाता नश जाता।
गौतमगणधर विरचित मंगल-सूत्रों की है इसमें गाथा।।1।।

ॐ ह्रीं ऋद्ध्यादिवर्णनसमन्वितवेदनाखण्डनामचतुर्थखण्डजिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचमवलये द्वाविंशतिकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पंचम खण्ड के 22 अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-त्रयस्त्रिंशत्सूत्रसमन्वित-स्पर्शानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-एकत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-कर्मानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशदधिकशत-सूत्रसमन्वित-प्रकृत्यनुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-चूलिकायुत बंध-बंधक-बंधनीयसमेत-सप्तनवत्यधिक-सप्तशत-सूत्रसमन्वित-बंधनानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-विंशतिसूत्रसमन्वित-निबंधनानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-प्रक्रमानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उपक्रमानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उदयानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-मोक्षानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-संक्रमानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्यानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्याकर्मानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्यापरिणामानुयोगद्वार नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-सातासातानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-दीर्घह्रस्वानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-भवधारणीयानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-पुद्गलतानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

18. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-निधत्तानिधत्तानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

19. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-निकाचितानिकाचिता-नुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

20. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-कर्मस्थित्यनुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

21. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-पश्चिमस्कन्धानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

22. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-अल्पबहुत्वानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

–पूर्णार्घ्य –

षट्खण्डागम का पंचम है, वर्गणा खण्ड आचार्य ग्रथित।
हैं एक सहस तेईस सूत्र, तेरह से सोलह तक पुस्तक।।
धरसेनसूरि सम गिरि से गिरती, गंगा मानो प्रगट हुई।
श्री पुष्पदंत अरु भूतबली के, अन्तस्तल से उदित हुई।।1।।

ॐ ह्रीं गणितादिनानाविषयसमन्वितवर्गणाखण्डनामपंचमखण्डजिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ षष्ठवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

छठे खण्ड महाबंध नाम षट्खण्डागम का अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य षष्ठखण्डान्तर्गत-चत्वारिंशत्सहस्रसूत्र-समन्वित-महाबन्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

–पूर्णार्घ्य –

षट्खण्डागम के छठे खण्ड में, महाबंध का नाम सुना।
है महाधवल टीका उस पर, श्रीवीरसेनस्वामी ने रचा।।
इस तरह बना षट्खण्डागम, महावीर दिव्यध्वनि अंश कहा।
ये सूत्र ग्रंथ कहलाते हैं, इनकी पूजन से सौख्य महा।।1।।

ॐ ह्रीं महाधवल टीकासमन्वित महाबंधनाम षष्ठखण्डजिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत अरु भूतबली, गुरु की कृति षट्खण्डागम है।
नौ हजार सूत्रों से युत, इस युग का यह श्रुत अनुपम है।।
बानवे सहस्र श्लोकों प्रमाण, टीका भी इसकी लिखी गई।
श्रीवीरसेन स्वामी कृत धवला, टीका को मैं जजूँ यहीं।।2।।

ॐ ह्रीं धवलामहाधवलाटीकासमन्वित षट्खंडागम जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ सप्तमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कषायप्राभृत ग्रंथ का अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं चूर्णिसूत्रसमन्वितद्विशतत्रयस्त्रिंशत्गाथा-सूत्रस्वरूप-कषायप्राभृतेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

–पूर्णार्घ्य –

श्रीगुणधर भट्टारक विरचित, है कषायप्राभृत ग्रंथ कहा।
जयधवला टीका संयुत सोलह, पुस्तक में उपलब्ध यहाँ।।
है द्वादशांग का पूर्ण सार, इन सब ग्रंथों में भरा हुआ।
इनके अतिरिक्त न सार कोई, अर्चन का मन इसलिए हुआ।।1।।

ॐ ह्रीं जयधवला टीकासमन्वितकषायप्राभृत जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम के सूत्रों पर, गणिनी श्री ज्ञानमती जी ने।
संस्कृत टीका सिद्धान्तसुचिन्तामणि रचकर दी इस युग में।।
श्रीवीरसेन आचार्य सदृश यह, टीका भी निधि इस युग की।
चिन्तामणि सम फल दात्री उस, टीकायुत ग्रंथ को करूँ नती।।2।।

ॐ ह्रीं सिद्धान्तचिन्तामणिटीकासमन्वितषट्खण्डागम जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं सिद्धान्तज्ञानप्राप्तये षट्खण्डागम जिनागमाय नमः।**

जयमाला

–शेर छंद –

जैवन्त हो महावीर दिव्यध्वनि जगत में।
जैवन्त हो गौतम गणीश ज्ञान जगत में।।
जैवन्त हो उन रचित द्वादशांग जगत में।
जैवन्त हो उपलब्ध शास्त्र अंश जगत में।।1।।

गौतम ने अपना ज्ञान फिर लोहार्य को दिया।
लोहार्य स्वामी से वो जम्बूस्वामी ने लिया।।

क्रमबद्ध ये त्रय केवली निर्वाण को गये।
फिर पाँच मुनी चौदह पूर्व धारी हो गये।।2।।

नंतर विशाखाचार्य आदि ग्यारह मुनि हुए।
एकादशांग पूर्व दश के पूर्ण ज्ञानी थे।।
अरु शेष चार पूर्व का इक देश ज्ञान पा।
परिपाटी क्रम से उसको जगत में भी दिया था।।3।।

नक्षत्राचार्य आदि पाँच मुनियों ने क्रम से।
पाया था वही ज्ञान एक देश अंश में।।
नंतर सुभद्र आदि चार मुनियों ने पाया।
इक अंग ज्ञान देश अंश ज्ञान भी पाया।।4।।

यह ज्ञान पुनः क्रम से श्रीधरसेन को मिला।
अतएव वर्तमान में श्रुत का कमल खिला।।
इस श्रुत की कहानी सुन रोमांच होता है।
शिष्यों के समर्पण का परिज्ञान होता है।।5।।

निज आयु अल्प जान दो मुनियों को बुलाया।
निज ज्ञान उन्हें सौंप मन में हर्ष समाया।।
मुनिराज नरवाहन तथा सुबुद्धि ने सोचा।
गुरु ज्ञानवाटिका की मैं समृद्धि करूँगा।।6।।

तब संघ चतुर्विध ने श्रुत की अर्चना कर ली।
देवों ने भी आकर गुरु की वंदना कर ली।।
मुनिवर सुबुद्धि जी की दंतपंक्ति बनाई।
कह पुष्पदंत उनकी महापूजा रचाई।।7।।

गुजरात अंकलेश्वर में चौमासा रचाया।
फिर ज्ञान को लिपिबद्ध करना मन में था आया।
मुनिवर सुबुद्धि जी ने सत्प्ररूपणा रची।
मुनिराज नरवाहन के पास उसे भेज दी।।8।।

आगे उन्होंने द्रव्यप्रमाणानुगम आदी।
षट्खण्डों में छह सहस सूत्रों की भी रचना की।
फिर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी की तिथि आ गई।
आगम की रचना पूर्ण कर संतुष्टि छा गई।।9।।

मुनिराज नरवाहन को पूजा भूत सुरों ने।
बलिविधि के साथ भूतबली कहा उन्होंने।।
वे इस प्रकार पुष्पदंत भूतबलि बने।
षट्खंड जिनागम को जीत चक्रपति बने।।10।।

सिद्धांतचक्रवर्ती थे धरसेन जी सचमुच।
श्री पुष्पदंत भूतबली में भी थे ये गुण।।
पश्चात्वर्ति मुनि भी उनके अंशरूप हैं।
जिनको मिला सिद्धान्त ज्ञान साररूप है।।11।।

त्रयखण्ड पे परिकर्म टीका कुन्दकुन्द की।
थी पद्धति द्वितीय टीका शामकुण्ड की।।
श्रीतुम्बुलूर सूरि ने टीका की पंचिका।
स्वामी समन्तभद्र ने चौथी रची टीका।।12।।

श्री बप्पदेव गुरु ने लिखी व्याख्याप्रज्ञप्ती।
धवलादि टीकाओं के कर्ता वीरसेन जी।।
इन छह में मात्र धवला उपलब्ध आज है।
पाँचों ही शेष टीका के नाम मात्र हैं।।13।।

सदि बीसवीं में भी मिले सिद्धान्त ग्रंथ ये।
चारित्रचक्रवर्ति शांतिसिंधु कृपा से।।
इन सबको ताम्रपत्र पे उत्कीर्ण कराया।
विद्वानों से टीकाओं का अनुवाद कराया।।14।।

संस्कृत तथा प्राकृत में मिश्र है धवल टीका।
अतएव मणिप्रवालन्याय युक्त है टीका।।

इसका ही ले आधार ज्ञानमती मात ने।
टीका रची सिद्धान्तचिन्तामणि नाम से।।15।।

इन सबकी टीकाओं को बार-बार मैं नमूँ।
षट्खण्ड जिनागम में मूलग्रंथ को प्रणमूँ।।
मुझको भी इन्हें पढ़ने की शक्ति प्राप्त हो।
माता सरस्वती मुझे तव भक्ति प्राप्त हो।।16।।

षट्खण्ड धरा जीत चक्रवर्ति ज्यों बनें।
षट्खंडजिनागम को भी त्यों ही जो पढ़ें।।
सिद्धान्तचक्रवर्ति वे हों 'चन्दनामती'।
पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ करूँ मैं वंदना-भक्ती।।17।।

—दोहा—

षट्खण्डागम ग्रंथ को, वंदन बारम्बार।
अर्घ्य समर्पण कर लहूँ, जिनवाणी का सार।।18।।

ॐ ह्रीं षट्खण्डागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—सोरठा—

जो पूजें चितलाय, षट्खंडागम शास्त्र को।
निज अज्ञान नशाय, वे पावें श्रुतसार को।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

प्रशस्ति

ऋषभदेव से वीर तक, चौबीसों भगवान।
उनके चरणों में करूँ, बारम्बार प्रणाम।।1।।

दो सहस्र अरु तीन सन्, श्रुत पंचमी महान।
षट्खण्डागम पूर्णता, का पावन दिन जान।।2।।

कुण्डलपुर शुभ तीर्थ पर, चतुर्मास शुभकाल।
नंद्यावर्त महल बना, जनता हुई निहाल।।3।।

इसी तीर्थ पर ज्ञानमती, माताजी के साथ।
ज्ञान, ध्यान, अध्ययन तथा, अध्यापन शुभकार्य।।4।।

इसी श्रृँखला में रचा, षट्खण्डागम का विधान।
मंत्र रचे माँ ज्ञानमती, अठहत्तर शुभ जान।।5।।

उसका ही आधार ले, ज्ञान प्राप्ति के हेतु।
रचा विधान सुभक्ति से, बुद्धि विशोधन हेतु।।6।।

जब तक जग में सूर्य-शशि, तब तक रहे विधान।
रहे ''चंदनामती'' सभी, सुखी यही वरदान।।7।।

।।इत्याशीर्वादः।।

षट्खण्डागम स्तुति

वन्दन शत शत बार है,
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन शत शत बार है।
श्री सिद्धान्तसुचिन्तामणि टीका जिसमें साकार है।।
वीर प्रभू के शासन का, सबसे पहला यह ग्रंथ है।
लिखने वाले पुष्पदंत अरु, भूतबली निर्ग्रन्थ हैं।
श्री धरसेनाचार्य से जिनको, मिला ज्ञान भण्डार है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वंदन बारम्बार है।।1।।

वीरसेन सूरी ने इस पर, धवला टीका रच डाली।
प्राकृत संस्कृत के वचनों में, मोतीमाल बना डाली।।
गूढ़ रहस्यों सहित ग्रंथ वह, विद्वत्मणि सरताज है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन बारम्बार है।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, नव इतिहास बनाया है।
संस्कृत टीका सरल रची, सिद्धान्तसार समझाया है।।
चिन्तामणि सम चिन्तित फल, देने में जो साकार है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन बारम्बार है।।3।।

श्री धरसेन व पुष्पदंत, आचार्य भूतबलि को वंदन।
वीरसेन गुरु को वंदूँ और, गणिनी ज्ञानमती को नमन॥
इनसे ही ''चन्दनामती'' यह मिला जिनागम सार है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन बारम्बार है।।4।।

श्री षट्खण्डागम ग्रंथराज की *मंगल आरती*

रचयित्री-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज –चाँद मेरे आ जा रे...............

आज हम आरति करते हैं–2
षट्खण्डागम ग्रंथराज की, आरति करते हैं।।
महावीर प्रभू के शासन का ग्रंथ प्रथम कहलाया।
उनकी वाणी सुन गौतम-गणधर ने सबको बताया।।
आज हम आरति करते हैं–2
वीरप्रभू के परम शिष्य की, आरति करते हैं।।1।।
क्रम परम्परा से यह श्रुत, धरसेनाचार्य ने पाया।
निज आयु अल्प समझी तब, दो शिष्यों को बुलवाया।।
आज हम आरति करते हैं–2
श्री धरसेनाचार्य प्रवर की, आरति करते हैं।।2।।
मुनि नरवाहन व सुबुद्धी, ने गुरु का मन जीता था।
देवों ने आ पूजा कर, उन नामकरण भी किया था।।
आज हम आरति करते हैं–2
पुष्पदंत अरु भूतबली की, आरति करते हैं।।3।।
श्री वीरसेन सूरी ने, इस ग्रंथराज के ऊपर।
धवला टीका रच करके, उपकार कर दिया जग पर।।
आज हम आरति करते हैं–2
वीरसेन आचार्य प्रवर की, आरति करते हैं।।4।।
गणिनी माँ ज्ञानमती ने, इस ग्रंथ की संस्कृत टीका।
लिखकर सिद्धान्तसुचिन्तामणि नाम दिया है उसका।।
आज हम आरति करते हैं–2
श्री सिद्धान्तसुचिन्ता-मणि की, आरति करते हैं।।5।।
चन्दनामती माताजी, माँ ज्ञानमती की शिष्या।
हिन्दी अनुवाद किया है, इस चिन्तामणि टीका का।।
आज हम आरति करते हैं–2
सरल-सरस टीका की ''सारिका'' आरति करते हैं।।6।।

षट्खण्डागम व्रत विधि

युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में जन्म लिया। प्रजा को असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प ऐसी षट् क्रियाओं का उपदेश देकर जीने की कला सिखाई, अनन्तर किसी समय वैराग्य को प्राप्त होकर इन्द्रों द्वारा लायी गई पालकी में बैठकर प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा लेकर एक हजार वर्ष के तपश्चरण के बाद प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे दिव्य केवलज्ञान प्राप्त किया, भगवान की दिव्यध्वनि खिरी जो कि सात सौ अट्ठारह भाषाओं में प्रसिद्ध है। प्रभु ऋषभदेव के समवसरण में उन्हीं के तृतीय पुत्र ऋषभसेन प्रथम गणधर हुए हैं, प्रथम पुत्र सम्राट् भरत चक्रवर्ती मुख्य श्रोता थे तथा पुत्री ब्राह्मी आर्यिकाओं में प्रधान गणिनी थीं। तभी से द्वादशांगरूप श्रुत अवतरित हुआ है।

यद्यपि यह द्वादशांगश्रुत विदेहक्षेत्र की अपेक्षा अनादि अनंत है तथापि भरत-ऐरावत क्षेत्र में चतुर्थकाल में तीर्थंकरों से अवतरित होने से सादि-सान्त भी है।

जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष थे, तभी अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी पावापुरी से कार्तिक कृष्णा अमावस्या को प्रातः प्रत्यूष बेला में निर्वाण को प्राप्त हुए हैं। उस दिन देवों ने निर्वाणकल्याणक महोत्सव मनाकर अगणित दीप प्रज्ज्वलित करके दीपमालिका पर्व मनाया पुनः उसी दिन सायंकाल में श्री गौतम गणधर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

इससे पूर्व तीस वर्ष पहले भगवान महावीर को जृंभिका ग्राम के निकट ऋजुकूला नदी के किनारे दिव्य केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। फिर भी भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरी थी पुनः राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के समवसरण में युक्ति के द्वारा लाये गये गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति ब्राह्मण ने भगवान के शिष्यत्व को स्वीकार कर मुनि बनकर गणधर पद प्राप्त किया था, उसी क्षण भगवान की दिव्यध्वनि खिरी थी वह श्रावण कृष्णा प्रतिपदा का दिवस था, जो कि प्रथम देशना के रूप में ''वीर शासन जयंती पर्व'' के नाम से प्रसिद्ध है। उसी दिन श्री गौतम स्वामी ने द्वादशांग की रचना की थी।

इसलिए भावश्रुत और अर्थपदों के कर्ता तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं और श्रुत पर्याय से परिणत श्री गौतम स्वामी द्रव्यश्रुत के कर्ता हैं। इन प्रथम गणधर ने संपूर्ण श्रुतज्ञान लोहार्य महामुनि को दिया, इन्होंने श्री जम्बूस्वामी को दिया। परिपाटी के क्रम से ये तीनों ही सकलश्रुत के धारक हुए हैं। क्रम-क्रम से इन

तीनों के मोक्ष प्राप्ति के बाद विष्णु, नंदिमित्र, अपराजित, गोवर्द्धन और भद्रबाहु ये पाँचों ही आचार्य परिपाटी से चौदह पूर्व के धारी श्रुतकेवली हुए हैं।

तदनंतर विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल आदि ग्यारह महामुनि परिपाटी क्रम से ग्यारह अंग और दश पूर्वों के ज्ञाता तथा शेष चारों पूर्वों के एकदेश ज्ञाता हुए हैं।

इसके बाद नक्षत्राचार्य आदि पाँच आचार्य ग्यारह अंगों और चौदह पूर्वों के एकदेश धारी हुए हैं। तदनंतर श्रीसुभद्र, यशोभद्र, यशोबाहु और लोहार्य ये चारों ही आचार्य संपूर्ण आचारांग के धारक और शेष अंग तथा पूर्वों के एकदेश के धारक हुए हैं।

इसके बाद सभी अंग और पूर्वों का एकदेश ज्ञान आचार्य परम्परा से श्रीधरसेनाचार्य को प्राप्त हुआ है।

सौराष्ट्र-गुजरात-कठियावाड़ देश के गिरिनगर के निकट ऊर्जयंत पर्वत की चन्द्रगुफा में रहने वाले, अष्टांग महानिमित्त के पारगामी प्रवचन वत्सल ये श्रीधरसेनाचार्य द्वितीय अग्राणयीय पूर्व की पंचम वस्तु के चतुर्थ महाकर्म प्रकृति प्राभृत के ज्ञाता थे।[1] ''ऊर्जयंतगिरि की गुफा में'' यह वर्णन इंद्रनंदिकृत श्रुतावतार में वर्णित है। यथा–

देशे ततः सुराष्ट्रे गिरिनगरपुरान्तिकोर्जयंतगिरौ।
चन्द्रगुहाविनिवासी महातपाः परममुनिमुख्या[2]।।

इन धरसेनाचार्य को एक समय यह चिंता हुई कि आगे इन अंग-पूर्व के अंश के ज्ञान का विच्छेद हो जावेगा अतः इस ज्ञान को किन्हीं योग्य शिष्यों को देना चाहिए। उन दिनों दक्षिण देश में वेणाक नदी के निकट जैन साधुओं का पंचवर्षीय महासम्मेलन था। वहाँ पत्र देकर एक ब्रह्मचारी को भेजा। वहाँ उपस्थित आचार्यों ने श्री धरसेनाचार्य द्वारा प्रेषित पत्र को पढ़कर श्री धरसेनाचार्य के अभिप्राय को समझकर अच्छी तरह निर्णय करके दो योग्य शिष्यों को भेजा। ये दोनों मुनिराज श्रीधरसेन गुरु के पास आये, विधिवत् गुरुवंदना आदि करके अपने आने का हेतु बताया। श्री आचार्यदेव ने इनकी यथायोग्य परीक्षा करके उन्हें शुभ मुहूर्त में अध्ययन कराना प्रारंभ किया और कुछ ही दिनों में आषाढ़ शुक्ला एकादशी को ग्रंथ पूर्ण किया। तभी व्यंतर देवों ने आकर इन गुरु की और दोनों शिष्यों-मुनियों की भी विशेष पूजा की। इस देवों द्वारा की गई पूजा के अनंतर श्री आचार्यदेव ने एक मुनि का 'पुष्पदंत' एवं दूसरे मुनि का 'भूतबलि' नाम घोषित किया। इसके पूर्व इनके नाम 'सुबुद्धि' और 'नरवाहन' थे, ऐसा विवुधश्रीधर

के श्रुतावतार में आया है।

पुनः गुरुदेव ने दोनों को वहाँ से विहार का आदेश दे दिया। 'गुरु आज्ञा अलंघनीय होती है' ऐसा सोचकर वे वहाँ से प्रस्थान कर अंकलेश्वर गुजरात में पहुँचे, वहाँ वर्षायोग धारण किया। अनंतर श्री पुष्पदंत मुनि ने बीस प्ररूपणा गर्भित सत्प्ररूपणा सूत्र 177 सूत्रों को लिखकर अपने शिष्य जिनपालित को पढ़ाकर पुनः उन सूत्रों को देकर जिनपालित मुनि को श्री भूतबलि महामुनि के पास भेजा।

श्री पुष्पदंताचार्य भी अल्पायु हैं, ऐसा जानकर एवं उन सत्प्ररूपणा सूत्रों को देखकर अति प्रसन्न होकर श्री भूतबलि आचार्य ने ''महाकर्म प्रकृति प्राभृत'' का विच्छेद न हो, इस भावना से आगे 'द्रव्यप्रमाणानुगम' को आदि लेकर ग्रंथ रचना प्रारंभ कर दी। अतएव इस खण्ड सिद्धांत की अपेक्षा श्री पुष्पदंत और भूतबलि आचार्य भी श्रुत के कर्ता कहे गये हैं।[1]

जब यह षट्खण्डागम ग्रंथ सूत्ररूप में लिपिबद्ध होकर पूर्ण हुआ, तभी चतुर्विध संघ ने मिलकर बहुत ही महोत्सवपूर्वक श्रुत की महापूजा की थी। वह तिथि ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी थी, जो कि आज भी जैनसमाज में श्रुतपंचमी के नाम से प्रसिद्ध है और सभी जैन बंधु-स्त्री, पुरुष भक्तिभाव से शास्त्रों की पूजा करते हैं।

षट्खण्डागम व्रत

यह षट्खण्डागम ग्रंथ छह खण्डों में विभक्त है–1. जीवस्थान 2. क्षुद्रकबंध 3. बंधस्वामित्व विचय 4. वेदनाखण्ड 5. वर्गणाखण्ड और 6. महाबंध।

प्रारंभ के पाँच खण्डों पर श्रीवीरसेनाचार्यवर्य ने धवला टीका लिखी है तथा महाबंध ग्रंथराज पर 'महाधवला' नाम से टीका प्रसिद्ध है।

इससे पूर्व श्रीकुंदकुंददेव आदि अनेक आचार्यों ने टीकाएँ लिखी हैं ऐसा ग्रंथों में ही उल्लेख है, आज वे टीकाएँ हमें उपलब्ध नहीं हो रही हैं। इन धवला टीका समन्वित पाँच खण्डों का हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशन सोलह ग्रंथों में छप चुका है।

इसी धवला टीका को आधार बना करके तथा इस टीका के ही कुछ सार अंशों को ग्रहण कर एवं अन्य ग्रंथों के भी आधार लेकर मैंने सिद्धान्त चिन्तामणि टीका नाम से संस्कृत टीका लिखी है पुनः उनके व्रत को करना प्रारंभ कियाहै। आप

---

1. षट्खण्डागम, धवला टीका समन्वित, पुस्तक 1, पृ. 68। 2. इन्द्रनंदि कृत श्रुतावतार-103।

सभी जिनागम भक्ति में ओतप्रोत भव्यों के लिए यह व्रत और उनके मंत्रों को यहाँ दिया जा रहा है।

व्रत विधि एवं मंत्र

प्रथम जीवस्थान खण्ड के नव व्रत हैं, उनके नव मंत्र हैं—

1. सत्प्ररूपणा 2. द्रव्यप्रमाणानुगम 3. क्षेत्रानुगम 4. स्पर्शनानुगम 5. कालानुगम 6. अन्तरानुगम 7. भावानुगम 8. अल्पबहुत्वानुगम और 9. नव चूलिका। यह प्रथम खण्ड छह ग्रंथों—पुस्तकों में वर्णित है।

द्वितीय खण्ड क्षुद्रकबंध के 13 व्रत हैं—

1. बंधकसत्त्वप्ररूपणा 2. स्वामित्वानुगम 3. एकजीवापेक्षाकालानुगम 4. एक जीवापेक्षान्तरानुगम 5. नानाजीवापेक्षा भंगविचयानुगम 6. द्रव्यप्रमाणानुगम 7. क्षेत्रानुगम 8. स्पर्शनानुगम 9. नाना जीवापेक्षा कालानुगम 10. नाना जीवापेक्षान्तरानुगम 11. भागाभागानुगम 12. अल्पबहुत्वानुगम 13. महादण्डक।

यह द्वितीय खण्ड केवल 7वें ग्रंथ में—सातवीं पुस्तक में वर्णित है।

तृतीय खण्ड बंधस्वामित्वविचय के 15 व्रत हैं—

1. गुणस्थान संबंधि-बंधस्वामित्वविचय 2. गतिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 3. इन्द्रियमार्गणा संबंधि बंधस्वामित्वविचय 4. कायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 5. योगमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 6. वेदमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 7. कषायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 8. ज्ञानमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 9. संयममार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 10. दर्शनमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 11. लेश्यामार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 12. भव्यत्वमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 13. सम्यक्त्वमार्गणा-संबंधि बंधस्वामित्वविचय 14. संज्ञिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्व-विचय 15. आहारमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय।

यह तृतीय खण्ड भी 8वें ग्रंथ—पुस्तक में निबद्ध है।

चतुर्थ वेदनाखण्ड के 17 व्रत हैं—

1. कृति अनुयोगद्वार 2. वेदना निक्षेपानुयोगद्वार 3. वेदनानयविभाषणता 4. वेदना नामविधान 5. वेदना द्रव्यविधान 6. वेदना क्षेत्रविधान 7. वेदना कालविधान 8. वेदना भावविधान 9. वेदना प्रत्ययविधान 10. वेदना स्वामित्वविधान 11. वेदना वेदनाविधान 12. वेदना गतिविधान 13. वेदनानन्तर विधान 14. वेदना सन्निकर्षविधान 15. वेदना परिमाणविधान 16. वेदना भागाभागविधान

1. षट्खण्डागम धवलाटीका सहित, पु. 1, पृ. 72।

और 17. वेदनाल्पबहुत्वानुयोगद्वार।

अग्रायणीय पूर्व की पंचम वस्तु के चतुर्थ प्राभृत का नाम कर्मप्रकृति है—जिनके कृति, वेदना, स्पर्श, कर्म, प्रकृति आदि 24 अनुयोगद्वार हैं। चतुर्थ खण्ड में 9, 10, 11 और 12 ये 4 ग्रंथ—पुस्तक हैं। नवमें ग्रंथ में मात्र कृत्यनुयोगद्वार का वर्णन है। 10, 11, 12वें ग्रंथ में वेदनानुयोगद्वार के 16 भेद विस्तार से वर्णित हैं।

पंचम वर्गणा खण्ड के 22 व्रत हैं—

1. स्पर्शानुयोगद्वार 2. कर्मानुयोगद्वार 3. प्रकृति 4. बंधन 5. निबंधन 6. प्रक्रम 7. उपक्रम 8. उदय 9. मोक्ष 10. संक्रम 11. लेश्या 12. लेश्याकर्म 13. लेश्यापरिणाम 14. सातासात 15. दीर्घ-ह्रस्व 16. भवधारणीय 17. पुद्गलात्त 18. निधत्तानिधत्त 19. निकाचितानिकाचित 20. कर्मस्थिति 21. पश्चिमस्कंध और 22. अल्पबहुत्वानुयोगद्वार। इस पंचमखण्ड में 13, 14, 15 और 16 इन चार ग्रंथों—पुस्तकों में स्पर्शानुयोगद्वार आदि 22 अनुयोगद्वार वर्णित हैं।

छठे खण्ड महाबंध का 1 व्रत है—1. महाबंध

कषायप्राभृत ग्रंथ का 1 व्रत है—1. कषायप्राभृत।

इस प्रकार ये व्रत 9+13+15+17+22+1+1=78 हैं।

विधि—इन व्रतों को अष्टमी, चतुर्दशी आदि किन्हीं भी तिथि में कर सकते हैं। उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार और जघन्य विधि एक बार शुद्ध भोजन करना है तथा आगे लिखे मंत्रों की जाप्य करना है। समुच्चय मंत्र तो प्रत्येक व्रत में जपना ही है पुनः एक-एक व्रत में 1-1 मंत्रों का जाप्य करना है।

श्रावक-श्राविकाओं को प्रत्येक व्रतों के दिन श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक करके षट्खण्डागम ग्रंथ की पूजा करना है।

इस व्रत को करने वाले श्रुतज्ञान की वृद्धि करके नियम से आगे भवों में श्रुतकेवली पद को प्राप्त करें।

षट्खण्डागम व्रत के 78 मंत्र

समुच्चय मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमजिनागमेभ्यो नमः।

प्रथम खण्ड के 9 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-सप्तसप्त्यधिकशतसूत्र-समन्वित-सत्प्ररूपणानाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।1।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विनवत्यधिकशतसूत्र-समन्वित-द्रव्यप्रमाणानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।2।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विनवतिसूत्रसमन्वित-क्षेत्रानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।3।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-पंचाशीत्यधिकशतसूत्र-समन्वित-स्पर्शनानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।4।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशदधिकत्रिशत-सूत्रसमन्वित-कालानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।5।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-सप्तनवत्यधिकत्रिशत-सूत्रसमन्वित-अन्तरानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।6।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-त्रिनवतिसूत्रसमन्वित-भावानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।7।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्वयशीत्यधिकत्रिशतसूत्र-समन्वित-अल्पबहुत्वानुगमनाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।8।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-पञ्चदशाधिकपञ्चशत-सूत्रसमन्वित-नवचूलिकानाम-जीवस्थानेभ्यो नमः।।9।।

द्वितीय खण्ड के 13 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रिचत्वारिंशत्सूत्रसमन्वित-बन्धकसत्त्वप्ररूपणानाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।10।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकनवतिसूत्रसमन्वित-स्वामित्वानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।11।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षोडशोत्तरद्विशतसूत्र-समन्वित-एकजीवापेक्षाकालानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।12।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकपंचाशदधिकशत-सूत्रसमन्वित-एकजीवापेक्षान्तरानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।13।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रयोविंशतिसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षाभंगविचयानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।14।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकसप्तत्यधिकशत-सूत्रसमन्वित-द्रव्यप्रमाणानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।15।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-चतुर्विंशत्यधिकशत-सूत्रसमन्वित-क्षेत्रानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।16।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीत्यधिकद्वि-शतसूत्रसमन्वित-स्पर्शनानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।17।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-पंचपंचाशतसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षयाकालानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।18।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टषष्टिसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षयान्तरानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।19।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टाशीतिसूत्रसमन्वित-भागाभागानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।20।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षडुत्तरद्विशतसूत्रसमन्वित-अल्पबहुत्वानुगमनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।21।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीतिसूत्रसमन्वित-महादण्डकनाम-क्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।।22।।

तृतीय खण्ड के 15 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्रसमन्वित-गुणस्थानसंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।23।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनषष्टिसूत्रसमन्वित-गतिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।24।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचत्रिंशतसूत्रसमन्वित-इन्द्रियमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।25।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-कायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।26।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-योगमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।27।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्रसमन्वित-वेदमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।28।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्रसमन्वित-कषायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।29।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टादशसूत्रसमन्वित-ज्ञानमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।30।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टाविंशतिसूत्रसमन्वित-संयममार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।31।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचसूत्रसमन्वित-दर्शनमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।32।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-सप्तदशसूत्रसमन्वित-लेश्यामार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।33।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-भव्यत्व-मार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।34।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्र-समन्वित-सम्यक्त्वमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।35।।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-संज्ञि-मार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।36।।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विसूत्रसमन्विताहार-मार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।।37।।

चतुर्थ खण्ड के 17 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-णमोजिणाणमित्यादि-गणधरमंत्रयुत सप्तभेदसहित षट्सप्ततिसूत्रसमन्वित-कृति-अनुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।38।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-वेदना-निक्षेपानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।39।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुस्सूत्रसमन्वित-वेदनानयविभाषणतानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।40।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुःसूत्रसमन्वित-वेदनानामविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।41।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चूलिकासमेतत्रयोदशोत्तर-द्विशतसूत्रसमन्वित-वेदनाद्रव्यविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।42।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-नवनवतिसूत्रसमन्वित-वेदनाक्षेत्रविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।43।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वयचूलिकासमेत एकोनाशीत्यधिक द्विशतसूत्रसमन्वित-वेदनाकालविधानानुयोगद्वारनाम-वेदना-खण्डेभ्यो नमः।।44।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिचूलिकासमेत-चतुर्दशोत्तर-त्रिशत्सूत्रसमन्वित-वेदनाभावविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।45।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-षोडशसूत्रसमन्वित-वेदनाप्रत्ययविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।46।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-पंचदशसूत्रसमन्वित-वेदनास्वामित्वविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।47।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-अष्टपंचाशत्सूत्र-समन्वित-वेदनावेदनाविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।48।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वादशसूत्रसमन्वित-वेदनागतिविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।49।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकादशसूत्रसमन्वित-वेदनानन्तरविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।50।।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-विंशत्युत्तरत्रिशतसूत्र-समन्वित-वेदनासन्निकर्षविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।51।।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिपंचाशत्सूत्रसमन्वित-वेदनापरिमाणविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।52।।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकविंशतिसूत्रसमन्वित-वेदनाभागाभागविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।53।।

17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-सप्तविंशतिसूत्रसमन्वित-वेदनाल्पबहुत्वानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।।54।।

पाँचवें खण्ड के 22 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-त्रयस्त्रिंशत्सूत्रसमन्वित-स्पर्शानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।55।।

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-एकत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-कर्मानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।56।।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशदधिकशत-सूत्रसमन्वित-प्रकृत्यनुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।57।।

4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-चूलिकायुत बंध-बंधक-बंधनीयसमेत-सप्तनवत्यधिक-सप्तशत-सूत्रसमन्वित-बंधनानुयोगद्वारनाम-वर्गणा-खण्डेभ्यो नमः।।58।।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-विंशतिसूत्रसमन्वित-निबंधनानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।59।।

6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-प्रक्रमानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।60।।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उपक्रमानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।61।।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उदयानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।62।।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-मोक्षानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।63।।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-संक्रमानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।64।।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्यानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।65।।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्याकर्मानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।66।।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्यापरिणामानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।67।।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-सातासातानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।68।।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-दीर्घह्रस्वानुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।69।।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-भवधारणीयानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।70।।

17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-पुद्गलतानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।71।।

18. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-निधत्तानिधत्तानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।72।।

19. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-निकाचितानिकाचिता-नुयोगद्वारनाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।73।।

20. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-कर्मस्थित्यनुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।74।।

21. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-पश्चिमस्कन्धानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।75।।

22. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-अल्पबहुत्वानुयोगद्वार-नाम-वर्गणाखण्डेभ्यो नमः।।76।।

छठे महाबंध नाम षट्खण्डागम का मंत्र—

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य षष्ठखण्डान्तर्गत-चत्वारिंशत्सहस्रसूत्र-समन्वित-महाबन्धेभ्यो नमः।।77।।

कषायप्राभृत ग्रंथ का मंत्र—

1. ॐ ह्रीं अर्हं चूर्णिसूत्रसमन्वितद्विशतत्रयस्त्रिंशत्गाथा-सूत्रस्वरूप-कषाय-प्राभृतेभ्यो नमः।।78।।